IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19650695

ISSN : 3048-6971

महादेवी के रेखाचित्र में चित्रित उच्च वर्ग

सुधा कुमारी
शोधार्थी
सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल
डॉ. मधुबाला श्रीवास्तव
शोध निदेशक
सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल

हिन्दी साहित्य की प्रमुख कवयित्री, महादेवी वर्मा (1907–1987) छायावाद की प्रमुख चार स्तम्भों में से एक हैं। वे कवयित्री, लेखिका के साथ–साथ शिक्षिका भी है। पिता– गोविन्द प्रसाद वर्मा और माता श्रीमती हेमरानी देवी, दादा श्री बाँके बिहारी जी के घर जन्मी महादेवी वर्मा जी का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रूखाबाद जिले में सन् 1907 ई० को हुआ था। सम्पन्न परिवार में जन्मी श्रीमती वर्मा बचपन से ही तेज बुद्वि की बालिका थी, घर के सभी कार्य घर पर ही माता जी द्वारा सिखाये जाने के पश्चात् उन्हें प्राथमिक शिक्षा के लिए विद्यालय भेजा गया। इन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। बाल्यावस्था में ही विवाह हो जाने के कारण कुछ दिन इनकी पढ़ाई रूक गई थी, लेकिन पुनः पढ़ाई लिखाई का कार्य प्रारंभ की जिसे विश्वविद्यालय की पढाई तक जारी रखा गया। इनकी रचनाएँ प्रकृति से जुड़ी हुई हैं। जिसमें रश्मि, निहार, नीरजा, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार, आदि प्रमुख है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए समाज के हर वर्ग से संबंध स्थापित करने पड़ते है, ताकि समय पर उनका सहयोग प्राप्त हो सके। सभी समाज में निम्न वर्ग का जन्म आर्थिक आधार पर ही होते हैं। यह सत्य है कि सम्पत्ति के बिना मनुष्य का समाज में कोई अस्तित्व छट जाता है। उच्च वर्ग का समाज से अटूट व घनिष्ठ संबंध रहा है। यहाँ उच्च वर्ग का मतलब उस वर्ग से है जिसके पास सम्पत्ति अधिक है, ताकत है और उसको इस्तेमाल करने का मनमाना ढ़ंग है। आज जिसके पास धन है, लोग उसे ही सभ्य, शिक्षित और महान मानते है, क्योंकि उनके पास प्रत्येक कार्य को करने की शक्ति उपलब्ध है। उच्च वर्ग में पूँजीपति, जमींदार, साहुकार, उद्योगपति, शासक वर्ग ही आते हैं। आज इनके पास इतना पैसा और पावर है कि ये एक दिन में मनचाहा करने के लिए सक्षम है। इनके पास जो पैसा है, यह सब मजदूरो के रक्त और श्रम से ही बनाया हुआ पैसा है। उनके सामने किसी भी प्रकार की विषम परिस्थिति नहीं आती और अगर आती भी है तो तुरन्त उसका समाधान ढूँढ लिया जाता है।

इस वर्ग ने हमेशा गरीबों को यातनाएँ दी है। प्राचीन काल से ही साहूकारों, जमींदारो ने गरीब व्यक्तियों की मजबूरी का नाजायज फायदा उठाया है। महादेवी जी ने 'स्मृति की रेखाएँ' के "भक्तिन" रेखाचित्र में जमींदारों द्वारा गरीब स्त्री पर किए गए अत्याचार और शोषण का चित्रण किया है। भक्तिन काफी मेहनती थी। पति के साथ उसे अपनी गृहस्थी को चमका दिया था। पति की मृत्यु के बाद वह पारिवारिक उलझन व द्वेष में ऐसे उलझ गई कि लगान अदा करना भी भारी हो गया। महादेवी लिखती है, "अंत में एक बार लगान न पहुँचने पर जमींदार ने भक्तिन को बुलाकर दिन भर कड़ी धूप में खड़ा रखा"। भक्तिन ने अपनी कर्मठता में सबसे बड़ा कलंक समझकर सबकुछ त्यागकर कमाने के विचार से शहर चली गयी। जमींदार के अत्याचारों के कारण एक विधवा स्त्री को भी अपना गाँव छोड़ना पड़ा। किसी ने इसपर ध्यान देना उचित नहीं समझा।

गरीब और लाचार व्यक्ति धनी वर्ग के नौकर–चाकर बनकर रहते है। उनके घरों की रखवाली भी करते है। उनमें दया की भावना दिखाई नहीं देती। यदि किसी के घर में चोरी हो जाय तो इल्जाम गरीबों पर ही आता है और उन्हें वह पुलिस के हवाले कर देते है। महादेवी वर्मा ने "सबिया" रेखाचित्र में पूंजीपतियों का गरीबों के प्रति बुरा व्यवहार का चित्रण किया है। महोदवी लिखती है, "मैकू और गेंदा किसी गाँव में मेला देखने जाकर लौटे रहे थे। तभी पास के बँगले में चोरी हो गई। ऐसी स्थिति में दूसरो के अपहृत धन से साहुकार बने हुए बड़े आदमी अपने नौकर–चाकर ही नही, आस–पास के दरिद्रो को भी कैसे–कैसे पशुओ के हाथ सौंप देते है, यह कौन नही जानता। उनको चाहे धन में से एक कौड़ी भी वापिस न मिले, पर अपने विक्षिप्त क्रोध में वे इन दरिद्रो के जीवन की बची–खुची लज्जा को भी तार–तार करकें फेंके बिना नही रहते।" अपने अहंभाव के कारण

अमीर लोग गरीबो को ही चोरी के लिए जिम्मेदार ठहराते है, इस संदर्भ में तनिक भी विचार नहीं किया जाता है कि गरीबो का भी मान–सम्मान होता है। महादेवी ने धनी वर्ग की प्रवृतियों को उजागर किया है।

समाज में कुछ स्थानीय संपन्न लोग ऐसे होते है, कि वे अपनी संपन्नता के गर्व में ग्रामीण लोगो को मानव समझना उचित नहीं समझते हैं। उनकी यह प्रवृति समाज में अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने के लिए होती है। पूंजीवादी लोग समाज की किसी भी प्रकार की मदद करना नहीं चाहते। महादेवी वर्मा का "मुन्नू" रेखाचित्र गाँवो में शिक्षा प्रसार से संबंध रखता है। महादेवी ने अरैल गाँव में एक पाठशाला खोली थी, जिसमें उनके द्वारा पढ़ाने–लिखाने तथा कताई–बुनाई सिखाने का प्रबंध किया गया था। अन्य सारा प्रबंध हो गया परंतु पाठशाला का सामान रखने के लिए स्थान का प्रबंध नहीं हो रहा था। महादेवी को पता चला की उसी गाँव में हिंदी के प्रसिद्व कवि ठाकुर गोपाल शरण सिंह की हवेली खाली पड़ी है। उन्हें बाईस वर्षो से उस ओर आने का अवकाश नहीं मिला। पाठशाला के लिए महादेवी ने उनसे पत्राचार किया। महादेवी लिखती है "उसकी स्वीकृति के संबंध में मेरे मन में कोई दुविधा नहीं थी। इसी से जब उनकी दृष्टि में मेरे उपयोगितावाद का विशेष महत्व नही ठहरा, तब मुझे विस्मय से अधिक ग्लानी हुई।" ठाकुर ने हवेली देने से इन्कार करने के कारण महादेवी को सारा सामान बाँटना पड़ा। उनका यह योजना बर्बाद हो गया। ठाकुर जैसे पूँजीपति द्वारा हवेली नहीं देने के कारण गाँव के बच्चो को शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। महादेवी ने उच्च वर्ग की प्रवृत्ति को विशद् चित्रण किया है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा के रेखाचित्र में वर्णित उच्चवर्ग के सभी पात्र किसी न किसी रूप में निम्नवर्ग का शोषण और दमन ही किया है। निम्नवर्ग के प्रति किसी की के ह्रदय में दयाभाव का सम्मान का भाव नहीं है। प्राचीन काल से आज तक यही देखा गया है कि उच्च वर्ग अर्थात धनी लोग निम्नवर्ग या गरीब का दोहन ही किया है। उच्च वर्ग के लोगों द्वारा निम्नवर्ग का सम्मान या उत्थान जैसे उदाहरण अपवाद मात्र हो सकते है। पूर्वकाल में गरीबों से काम कराने के पश्चात् सिर्फ खाना दिया जाता था वह भी या तो जूठा (बचा–खुचा) रहता था, या बासी। उस मजदूर के परिवार के अन्य सदस्यों का भी कोई ख्याल नहीं रखा जाता था कि आखि रवह क्या खायेगा ? नतीजा यह होने लगा कि उस परिवार के सभी सदस्य सिर्फ पेट की भूख मिटाने के लिए उच्च वर्ग को मालिक कहने लगा और सभी मालिक के यहाँ इसी उम्मीद से दिनभर मेहनत करता था। अन्तोगत्वा परिवार के सभी सदस्य बँधुआ मजूदर बनने को विवश हुआ। यह प्रक्रिया जारी रहा। अमीर और अमीर होने लगे और गरीब और गरीब। आर्थिक विषमता इतनी बढ़ गयी कि आर्थिक विषमता के कारण समाज में दरारें पड़ने लगी।

आर्थिक विषमता के कारण समाज में दरारे पड़ी है। धन की प्रधानता के कारण ही समाज में सभी का दर्जा निश्चित हो रहा है। आर्थिक विषमता के कारण ही समाज में वर्गों का निर्माण हुआ दिखाई देता है। उच्च वर्ग निम्नवर्ग का शोषण करता है। समाज में संघर्ष हो रहा है।

महोदवी ने अपने रेखाचित्र मे उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग के विषम स्थिति का चित्रण किया है। उच्च वर्ग ने हमेशा निम्न वर्ग को यातनाएँ दी हैं, सताया है। निम्न वर्ग उच्च वर्ग के नौकर–चाकर रहें है। सबिया, मैकू, गेंदा समाज में इज्जत के साथ रहना चाहते है, सम्मान के साथ जीना चाहते हैं। लेकिन उनपर चोरी का झूठा आरोप लगाया जाता है। ठाकुर गोपाल शरण सिंह जैसे लोग भी जो स्वयं को बड़े कवि कहते है वे भी निम्नवर्ग के लोगो की शिक्षा के आड़े आते है। उनकी मनसा भी निम्न वर्गों के प्रति अच्छा नहीं है।

निम्न वर्ग हमेशा अभावों में जीवन जीता आ रहा है। सबिया अपने परिवार की भूख अमीर लोगों के दिए हुए टुकड़ो से मिटाती है। घीसा का तन भी अमीर के कुर्ते से ढ़का हुआ है। लेकिन निम्नवर्ग का जीवन सादा, सरल, सच्चा होता है। उनमें किसी भी प्रकार का कपट नहीं होता। महादेवी में निम्न वर्ग के प्रति संवेदना दिखाई देती हैं।

सदंर्भ सूची :–

1. सुमन क्षेमेन्द्र – साहित्य विवेचन, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, चतुर्थ सं०, पृष्ठ–15
2. गौतम लक्ष्मणदत्त –'महादेवी वर्मा, कवि और गद्यकार, कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–06
3. छेड़ा माधुरी – स्त्री जीवन दर्शन, माहेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–101
4. वर्मा महादेवी – अतीत के चलचित्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–कुल
5. वही – स्मृति की रेखाएँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–कुल
6. गुप्त शांति स्वरूप – अतीत के चलचित्र–एक विवेचन, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–23